647510 **BA05HinF501B** **Seat No :_____**

B.A. Semester - 5 (*CBCS*) Examination
Oct/Nov - 2021 (NEW COURSE)
HIN Anchalik Upanyas: Maila Aanchal(Foundation)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न.१ फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए। (१४)

अथवा

प्रश्न.१ आँचलिक उपन्यासकारों में फणीश्वरनाथ रेणु का स्थान निश्चित कीजिए।

प्रश्न.२ 'मैला आँचल' उपन्यास की कथावस्तु लिखिए। (१४)

अथवा

प्रश्न.२ उपन्यास कला के तत्वों के आधार पर 'मैला आँचल' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न.३ आँचलिकता के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए। (१४)

अथवा

प्रश्न.३ 'मैला आँचल' उपन्यास के डॉ. प्रशांत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न.४ 'मैला आँचल' उपन्यास में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (१४)

अथवा

प्रश्न.४ किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए।

१. 'मैला आँचल' उपन्यास का शीर्षक।
२. 'मैला आँचल' उपन्यास का बालदेव।
३. 'मैला आँचल' उपन्यास का परिवेश।
४. 'मैला आँचल' उपन्यास का उद्देश्य।

प्रश्न.५ निम्नलिखित परिच्छेदों का अनुवाद कीजिए। (१४)

(अ) हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

આપણા દેશમાં ધર્મો-સંપ્રદાયોના અનેક ઉપાસના ગૃહ મંદિર, મસ્જિદ, ગિરજાઘર તથા ગુરુદ્વારા છે. બધા જ શાંતિ ઈચ્છે છે પરંતુ શાંતિનું દર્શન ક્યાંય નથી થતું, દરેક સ્થાને કોઈ ને કોઈ આંદોલન ચાલુ જ હોય છે. પથ્થર, સિમેન્ટ, ગારયૂનાથી બનેલા આ ભવ્ય પવિત્ર સ્થાનોથી મનુષ્યની નૈતિકતાને કોઈ તાકાત કેમ નથી મળતી? જરૂરિયાત એ વાતની છે કે આ ધાર્મિક સ્થાનોથી નૈતિક્તા અને શાંતિનો સંદેશ પ્રસારિત થાય. આપણે આજે ધાર્મિક ક્ષેત્રમાં આવશ્યકતા છે વૈચારિક ક્રાંતિની, સત્સાહિત્યની અને ચરિત્ર નિર્માણની.

प्रश्न.५(ब) गुजराती में अनुवाद कीजिए:

जिस देश का अन्न जल ग्रहण कर हम बढते हैं और जीवित रहते हैं, उस देश की सेवा करना तथा उसका हितचिंतन करना हमारा पहला कर्तव्य है। तन-मन-धन से अपने देश की सेवा करने का नाम ही सफलता है। यह विवादरहित है कि किसी भी देश की सेवा का भार उसी देश के रहनेवालों पर होता है। देश पर जब किसी प्रकार की आपत्ति आती है, तब कायर भी वीर बन जाते है। हमें तब यह विचार आता हैं कि वे सब वस्तुएँ जिनकी हम प्रतिष्ठा करते हैं, जिनका नाम लेते हैं, जिनको पवित्र समझते हैं, जिनसे प्रेम करते हैं, नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगी और यही विचार देशवासियों को चंडी जैसा प्रचंड रूप धारण करने के लिए बाध्य कर देता है।

****